शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना

– डॉ० सुनील कुमार एवं
– सुश्री सविता

कथायात्रा के विकास में समस्यामूलक उन्यासों की रचना विगत दिनों की बात हो चुकी है। रचनात्मकता नारे और उपादेयता से अपने को सदा अलग रखती है। किन्तु सामाजिक उपादेयता और प्रासंगिकता के विचार से समस्यामूलक उपन्यासों की महत्ता असंदिग्ध है। ऐसी रचनायें समस्या को रचनात्मक स्तर पर उठाने में कहाँ तक समर्थ होती हैं, इसकी समीक्षा आवश्यक है। प्रस्तुत शोध आलेख नासिरा शर्मा के उपन्यास 'कुइयाँजान' की उपरोक्त संदर्भ में समीक्षा है।

विषय संकेतः– नासिरा शर्मा, कुइयाँजान, हिन्दी उपन्यास

श्रीमती नासिरा शर्मा समकालीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। इन्होंने अपने साहित्य में विविध विषयों को अपनाकर उस पर अपनी लेखनी चलाई है। इन्होंने रुढ़िवादी एवं अन्धविश्वासी होने के कारण लड़की के जीवन स्वाहा होने की कथा, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान विभाजन, आज के युग की आधुनिक पढ़ी-लिखी और ऊँचे पद पर काम करने वाली नारी का चित्रण, ईरान देश की क्रान्ति, आम व्यक्ति का शोषण, भारतीय मुस्लिम, समाज, राजनैतिक अव्यवस्था से पीड़ित ईरानी समाज, जल समस्या, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक रंगभूमि, भारत में होने वाले साम्प्रदायिक दंगे, आधुनिक युग की कामकाजी महिलायें, राजस्थान के लेखक आदि विषय को अपने साहित्य में संजोया है। नासिरा शर्मा ने समाज के किसी भी पक्ष को अपने साहित्य से अछूता नहीं रखा। नासिरा शर्मा के साहित्य में छिपे सन्देश को ढूँढने के लिए सरसरी नजर की आवश्यकता है। इसके लिए एक व्यक्ति का बुद्धिजीवी एवं संवेदनशील होना अति आवश्यक है। नासिरा शर्मा ने अपने साहित्य के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति को मानवता, शान्ति, अपनेपन का सन्देश देना चाहा है।

जल का सांस्कृतिक एवं वर्तमान स्वरूप और कुइयाँजान

प्राचीन समय में जल को पवित्रता का प्रतीक माना जाता था। इसलिए हिन्दी संस्कृति में जल को वरुण देवता का रूप माना गया है। जीवन का स्रोत जल है। यही कारण है कि नदियों को जीवनदायिनी कहा गया है। जल का प्रयोग पवित्र कार्यो के लिये किया जाता था। जैसे- किसी पाठ-पूजा, हवन, शरीर शुद्धि आदि। पूजा अर्चना में जल की विद्यमानता आवश्यक मानी गई है। जल के अभाव से किसी भी हवन या पाठ पूजा को सफल नहीं माना जाता है। मन की शुद्धि के लिये भी जल का प्रयोग किया जाता है क्योंकि हमारे शरीर में शुद्ध जल प्रवाहित रहता है। आज भी यह मान्यता है कि गंगा जल एवं पवित्र धामों का जल एवं सरोवर में स्नान करके मनुष्य को पापों से मुक्ति मिलती है। चाहे आज समाज में भले ही मूल्य बदल गये हों परन्तु हमारी प्राचीन संस्कृति में जल को पूज्य माना गया था। उसी के आधार पर आज भी हम जल को पूज्य मानते आ रहे हैं। प्राचीन समय में हमारी संस्कृति में जल के प्रति श्रद्धा भक्ति थी और जल को बड़ा महत्त्व दिया जाता था। परन्तु वर्तमान समय में जल के प्रति दृष्टि में परिवर्तन आ गया है। सच तो यह है कि मानव स्वयं भी मशीन बन चुका है। वह अपनी सभी भावनाओं, संवेदनाओं तथा मर्यादाओं को खो चुका है। मनुष्य ने जल में गन्दगी फैला कर जल प्रदूषण की समस्या खड़ी कर दी है। जल के दुरुपयोग के कारण भू जल का स्तर गिर गया है जिससे जल की समस्या उत्पन्न हो रही है। आजकल जल की किल्लत इतनी बढ़ चुकी है कि सभी शहरों व कस्बों में जल बिक्री की वस्तु बन गया है। अब जल भारी दामों पर खरीदना पड़ता है क्योंकि जल ही जीवन है और जीवन ही जल है अर्थात् जल के बिना जीवन असम्भव है। माना गया है कि यदि प्रकृति से खिलवाड़ किया जाता है तो बदले में प्रकृति भी अपना प्रकोप दिखाती है। आधुनिक मशीनी युग में प्रकृति से खिलवाड़

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

कर जैसे पहाड़ काटकर सड़कें बनाना, वृक्ष काटना, छोटे-छोटे तलाबों को मिट्टी डाल कर बन्द करना एवं भरवा देना, भूमि में गहरी खुदाई कर प्रकृति का सन्तुलन बिगाड़ कर रख दिया है जिस कारण प्रकृति इनके बदले में अपना पकोप दिखा रही है अर्थात् सुनामी, बाढ़, सूखा आदि जैसी विपत्तियाँ पृथ्वी पर आ रही है। प्राचीन समय मे गंगा के दर्शन मात्र से एवं स्मरण से सारे पाप मिट जाते थे परन्तु आज हमारी जीवनशैली में इतना परिवर्तन आ चुका है वह शहरों के विषैले पद्धार्थों को ढोते-ढाते स्वयं भी पापिन बन चुकी है। समाज में आ रहे नवीन एवं विनाशकारी परिवर्तनों के कारण इसके घातक परिणाम आज मनुष्य के सामने हैं और भविष्य में और भी भयावह हो सकते हैं। दूसरी तरफ गंगा-यमुना की सफाई को लेकर करोड़ों-अरबों रुपये प्रतिवर्ष खर्च कर दिए जाते हैं जबकि इसका असर कहीं दिखाई नहीं देता। देश की लगभग हर छोटी-बड़ी नदी की यही स्थिति है।

इस सम्बन्ध में समय-समय पर साहित्यकारों ने अपनी महत्त्वपूर्ण रचनाओं के माध्यम से जल की महत्ता व जल संकट की ओर ध्यान आकृष्ट कराया है। जल को आधार बनाकर सामाजिक सांस्कृतिक और अन्य समस्याओं की भी लेखकों ने उठाने का प्रयत्न किया है। प्राचीन वाङ्मय से लेकर समकालीन साहित्य में यह परम्परा परिलक्षित होती है। इस दिशा में हिन्दी उपन्यासों में- ईश्वरी प्रसाद गुप्त कृत 'बहता हुआ जल', रामदरश मिश्र कृत 'जल टूटता हुआ', 'पानी क प्राचीर', 'सूखता हुआ तालाब', सुर्वेश्वरदयाल सक्सेना कृत 'सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा', रवीन्द्र वर्मा कृत 'पत्थर ऊपर पानी', रज्जन त्रिवेदी कृत 'नदी फिर लौट आई, राजेन्द्र अवस्थी कृत' बहता हुआ पानी', हरिशंकर परसाई कृत 'ज्वाला और जल' और हिन्दी कहानीयों में- जया जादवानी कृत 'अन्दर के पानियों में कोई सपना कांपता है', प्रभा सरस कृत 'एक लोटा पानी', जे.भारतदास कृत 'नदी पर बांध', 'समुद्र का खजाना', अजीत कौर कृत 'काले कुएँ', मुंशी प्रेमचन्द्र कृत 'ठाकुर का कुआँ' और हिन्दी कविताओं में- मनोरमा वि. महापात्र कृत 'वर्षा आए तो', विमल कुमार कृत 'पानी का दुखड़ा', मुकुट बिहारी सरोज कृत 'पानी के बीज', नीलेश रघुवंशी कृत 'पानी का स्वाद', पी.एस. रामानुज कृत 'नदी के साथ बहते', अनुपम कृत 'जलतरंगों की आत्मकथा', हेमन्त कुकरेती कृत 'कभी जल कभी जाल' और हिन्दी निबन्धों में- विद्यानिवास मिश्र कृत 'रहिमन पानी राखिए', 'गिर रहा है आज पानी', अज्ञेय कृत 'एक बूंद सहसा उछली', और हिन्दी बाल नाटकों में मधुकर सिंह कृत 'मेघा मेघा, पानी दे' आदि उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य रचनाओं में संतराम वत्स कृत 'पानी की कहानी', सत्येन कुमार कृत 'नदी को याद नहीं', तुरशन पाल पाठक कृत 'मैं हूँ पानी', शिशिर भूषण कृत 'बिन पानी सब सून', श्रीमती सर्वेश कृत 'साफ पानी: सेहत की निशानी' इत्यादि जल की उपादेयता को रेखांकित करती प्रमुख रचनाएँ हैं। इसी दिशा में नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' जल संकट की समस्या पर आधारित समकालीन महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं। इसका प्रकाशन सन् 2009 में सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ। इस उपन्यास के कुल पृष्ठ 416 हैं। इस उपन्यास में लेखिका का मुख्य विषय जल संकट की समस्या है। इसके साथ ही इस उपन्यास का गौण विषय पारिवारिक समस्या, गरीबी, स्वार्थ, प्रेम, प्रेम-विवाह आदि रहा है। जल की ज्वलंत समस्या को लेकर अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखिका नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास कुइयाँजान का रोचक ताना-बाना बुना है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास कुइयाँजान में यह बताना चाहा है कि 'कुइयाँ' वह जल स्रोत है जो आदिम युग से मनुष्य की प्यास बुझाता रहा है। कुइयाँ मनुष्य की पहली उपलब्धि थी जिसके द्वारा हमने अतीत में अपनी प्यास बुझाकर हासिल की थी एवं अपने प्राणों की रक्षा की थी। आधुनिक टेक्नोलॉजी के युग में मानव जाति ने उस मूलस्रोत को आदिम स्रोत करार कर के उनको नकारा है एवं अपनी मशीनी ताकत के बल पर जल से खिलवाड़ कर रहे है जिसका परिणाम यह निकला है कि इतनी अधिक जलसंपदा होने के कारण भी आज हम पानी से प्यास बुझाने के लिए तड़पने को विवश हैं। जिस तरह आज हम प्रकृति का वरदान जलसंपदा को नष्ट कर रहे है, उसके कारण वह दिन दूर नहीं जब पानी को लेकर विश्व एक और तीसरे महायुद्ध की दहलीज पर खड़ा होगा, जैसी भयावह संकल्पना साकार हो सकती है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

कुइयाँजान में जल के रूप-प्रतिरूप

नासिरा शर्मा ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास कुइयाँजान में अपना प्रमुख विषय जल संकट की समस्या को रखा है। उन्होंने छोटी-छोटी बातों में जल के महत्त्व को रेखांकित करते हुए के ताने बाने को सम्पूर्ण जगत को जल के सही उपयोग करने का सन्देश दिया है और जल के अभाव या कमी से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से लोगों को सचेत किया है। नासिरा शर्मा ने मृत्यु से सम्बन्धित सांस्कृतिक रस्मों रेखांकित करते हुए के ताने बाने को जल के महत्त्व को मौलाना जी की मृत्य के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। 'समस्या अब पानी की थी। चौराहे के खंभे में आग लगने से तार जल गए थे। कल दोपहर से पूरे इलाके में बिजली नहीं थी जो पानी आता था। बचे हुये पानी से सबने किसी तरह अपना काम चला लिया था, मगर गुस्ले-मैयत के लिए तो घड़ों में पानी चाहिए था। कुछ घरों में दो-तीन बाल्टी पानी मौजूद था मगर यह पाक नहीं था।'[1]

जल एक ऐसी समस्या है जिसके द्वारा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। पानी से सम्बन्धित एक समस्या है बिजली। यदि पानी की कमी होगी तो स्वभाविक ही हो जाता है कि बिजली की भी समस्या सामने खड़ी हो जाती है। इस उत्पन्न होने वाली समस्या को भी नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास में चित्रित किया है- 'आज दो दिन बाद बिजली आई थी। उसके साथ पानी भी आया था। अंधौरियों से भरे बदन वाले रोते बच्चों को माओं ने पकड़कर सबसे पहले नहलाया, फिर पानी भरा और खुद नहाई, तब जाकर चूल्हे पर चाय का पानी रखा।[2] लेखिका ने केवल मनुष्य जीवन का चित्र खींचा बल्कि सम्पूर्ण जातियों-प्रजातियों के लिए पानी की महत्ता को भी अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया है कि केवल मानव जीवन ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी पानी की कमी से परेशान हैं। जल के अभाव की समस्या को लेखिका ने रचनात्मक स्तर पर उभारने की कोशिश की है- 'मई की तपती दोपहर में अंदरसेवाली गली में कुत्ते पानी की तलाश में बेचैन फिर रहे थे। बार-बार नाली के पास जाकर वह बहती गंदगी को हसरत से देखते, फिर सूंघते और मुँह हटा लेते। नाली में बहती गंदगी इतनी गाढ़ी थी कि उससे पानी अलग नहीं था जिसको वह सतह पर से चाटकर अपनी प्यास बुझा सकते। चिड़ियों के गोल मुंडेरों पर बैठे हाँफ रहे थे।'[3] लेखिका ने कहा है कि एक ओर पानी की किल्लत और दूसरी ओर गरमी का मौसम दोनों ही जीवन को हानि पहुँचा रहे थे। वातावरण में आग इस प्रकार बरस रही थी कि मानो जीवन आज ही समाप्त होने वाला हो और एक ओर गंदे नाले से निकलती बदबूदार गैस और तीखी हो उठी थी। इतने गर्म वातावरण में पानी भी अपना बदला लेता है- 'पानी भी ऐसा उबलता गिरता है कि लगता है चाय बनाने के लिए वाटरवर्क्स ने खास सुविधा प्रदान की हो।'[4]

जल मानव जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है। जल को ही जीवन की संज्ञा दी गई है। वतमान समय में जल के दुरुपयोग के कारण इसकी कमी इतनी बढ़ चुकी है कि अब इसे प्राप्त करने के लिए पैसे देने पड़ते हैं। लेखिका ने भी जल की कमी को इस प्रकार से स्पष्ट किया है- 'सुबह अभी हुई नहीं थी, मगर घरों के दरवाज़े खुलने बंद होने लगे थे। अपने-अपने बरतन लेकर लोग नल की तरफ बढ़ रहे थे जिनके घर नल था, उनके यहाँ भी अंधेरे में खटपट शुरु हो गई थी।'[5] लेखिका ने जल का एक और उदाहरण दिया है और इन्होंने लोगों को जाग्रत करना चाहा है। जल केवल पेय वस्तु नहीं है बल्कि यह शरीर की स्वच्छता के लिये भी अत्यधिक आवश्यक है। यदि हम अपने शरीर को साफ नहीं रखेंगे तो हम स्वस्थ नहीं रह सकते। जल स्वास्थ्य पर पड़ रहे असर की बात भी लेखिका ने की है- 'महीना से ऊपर हो रहा है। बुखार पहले पकड़े रहा, फिर पानी की परेशानी रही। आठ-दस बाल्टी ढोकर यहाँ तक लाने में हमें कष्ट न था, मगर यहाँ न बरतन ज्यादा हैं और फिर हर बार नल पर पानी लेने के लिए नये सिरे से लाइन में खड़ा होना पड़ता था। इतनी देर में पानी ही चला जाता था।'[6] जल का दैनिक जीवन में बहुत महत्त्व है लेखिका ने डॉक्टर कमाल के संदर्भ में लोगों और बीमार व्यक्ति के लिए जल की आवश्यकता को इस प्रकार स्पष्ट किया है- 'आप लोगों से बड़ी लापरवाही हो गई है। लंबी बीमारी वाले मरीज का बदन भीगे तौलिया से पौंछते रहना चाहिए। उसे बराबर करवट बदलवाते रहना चाहिए।'[7] एक समय ऐसा भी था जब भारत देश के प्रत्येक गाँव में तीन या चार तालाब

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

और कुएँ हुआ करते थे। तालाब और कुओं का पानी इतना ठंडा होता था कि लोग अपना गला तर कर लेते थे। घरों में रहने वाले पशु-पक्षी भी तालाब का पानी पीते थे और रोगमुक्त रहते थे। कहीं अचानक आग लग जाए तो, उसे बुझाने के लिए भी पानी नहीं मिलेगा। ऐसा ही एक चित्र दृष्टव्य है। उदाहरण देखिए- 'किसी को कुछ नहीं पता, बाबू। हम सब सोवत रहे। जब आग ने जोर पकड़ा तो गरमी से हमारी आंख खुल गई। फिर भगदड़ मची। जिसके पास जितना पानी था, डाला, मगर आग न बुझी।'[8] इसमें स्पष्ट झलक मिलती है कि यदि पानी की कमी न होती तो आग को रोका जा सकता था। बिन भोजन के तो प्राणी रह सकते हैं परन्तु बिना जल के कुछ क्षण भी निकालना उनके लिये बहुत मुश्किल काम है। आज के युग में जल की माँग बहुत अधिक बढ़ चुकी है। इस जल की माँग को पूरा करने के लिए सतही जल, बरसात का जल, नदियों का जल, तालाबों, झीलों का जल एवं भूमिगत जल, दोनों ही स्रोतों का भरपूर दोहन किया जा रहा है। लेकिन सतही जल की तुलना में भूमिगत जल स्रोतों का दोहन कुछ अधिक ही किया गया है। इसी का परिणाम सामने है कि भूमिगत जल की अंधाधुन्ध निकासी से इसका जल स्तर लगातार नीचे खिसकता जा रहा है। जिन क्षेत्रों में जल के पुनर्भरण की समुचित व्यवस्था नहीं है, वहाँ कुएँ सूख गए हैं, हैण्ड-पम्पों तथा नलकूपों ने जल की कमी से काम करना बन्द कर दिया है। आज हालत यह कि भूमिगत पानी की अति निकासी और जलभरण की कोई व्यवस्था न होने से पंजाब के 12 तथा हरियाणा के तीन जिलों में भूमिगत जल स्तर खतरनाक स्तर तक नीचे चला गया है। देश के अनेक हिस्सों में यह स्थिति अत्यन्त गम्भीर बन चुकी है। समय-समय पर ऐसे अनेक चौंकाने वाले आँकड़ें हमें देखने व सुनने को मिलते हैं। जल एवं पेय पानी को इतनी किल्लत समाज में आ चुकी है कि लोग अपने अपने पशुओं को इस भटकन के लिए खुला छोड़ देते हैं। नासिरा शर्मा ने पानी की किल्लत को बुआ के संदर्भ में चित्रित किया है जब वे ऐसा कहती हैं- 'तेरे मुंह में खाक ! मरने वाले अपनी मौत से मरते हैं, किसी को पानी पिलाने से नहीं। जाकर पूछो उन जालिमों से कि चौपाये रख लिए, दूध निकालते हैं, मगर चारा-पानी के लिए हंका देते हैं बाहर। वाह रे वाह ! धोबी पर बस न चले, गधे का कान उमेठो।'[9]

जल की किल्लत के कारण यह आज बाजार में खरीदने की वस्तु बन चुकी है जिसे प्राप्त करने के लिए हमें इसकी भारी रकम अदा करनी पड़ती है। जल समस्या की इस वास्तविकता को समझते हुए इसका उपयोग एक कीमती वस्तु के रुप में किफायत के साथ किया जाना चाहिए। समग्र आर्थिक विकास तथा जीवन रक्षक तत्त्व के रूप में जल के महत्त्व को समझना चाहिए। नासिरा शर्मा ने जल को खरीद के संदर्भ में इस प्रकार इसे चित्रित किया है- 'स्टेशन तक जाओगे ? फिर बोतल कितनी महंगी पड़ेगी?'[10] नासिरा शर्मा ने जल के मूल्य को समाज के सामने चित्रित एवं प्रस्तुत किया है। कहा गया है कि राजस्थान में लोग किसी को घी देने से इतना नहीं झिझकते जितना की पानी देने से। कहने का भाव यह है कि आज पानी का महत्त्व घी से अधिक है। इस संदर्भ को नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास में रत्ना के माध्यम से व्यक्त किया है- 'आज तो सोने से भी ज्यादा मूल्यवान् जल होय गवा है।'[11] प्राचीन शास्त्रों में जल की महत्ता का बखान किया गया है। ऋषियों-मुनियों ने इसे 'जल ही जीवन है' कहकर इसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण बताया है। जल को पंच तत्त्वों में महत्त्वपूर्ण बताया गया है। पानी न हो तो आदमी प्यास के मारे जान से ही हाथ धो बैठे। तात्पर्य यह है कि जल की जीवन में बहुत आवश्यकता होती है उपयोग होता है परन्तु आज प्राय: महानगरों में पानी की भारी कमी अनुभव की जा रही है और पानी आने के बाद जितनी खुशी वह अनुभव करते है उतनी वह किसी और बात पर नहीं करते। इस बात को नासिरा शर्मा ने बाबू जी के माध्यम से व्यक्त किया है- 'आ रहे हैं भाई। मैं नहाना भी ता नहीं टाल सकता हूँ। आखिर पूरे चार दिन बाद पानी आज आया है। यह कह वह कहकहा मारकर हँस पड़े और बैठे लोग विचारमग्न हो उठे कि क्या वास्तव में नदियों का जाल पूरे देश में बिछ सकता है और तब जगह-जगह पानी उचित मात्र में मौजूद होगा'[12] पानी की इस खुशी को लेखिका ने रत्ना के माध्यम से भी बताने का प्रयत्न किया है- 'ऐसा सुख हमें रोज क्यों नहीं मिलता? रत्ना ने मन ही मन कहा और बोतल खोल घूंट भरा। उसका सारा शरीर तरावट से भर गया। एक ताजगी-सी अपने चारों तरफ फैलती महसूस हुई। उसने

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

चुल्लू में पानी ले सिर पर डाला। बालों के बीच रेंगते पानी ने एक सिहरन-सी बदन में दौड़ा दी। दूसरा चुल्लू भर उसने मुंह पर छींटा मारा। ठंडा पानी जलते चेहरे से गिर गरदन में होता हुआ सीने पर बहा। सुख की असीम अनुभूति से उसका अंग-अंग पुलक उठा। उसने बिना सोचे-समझे बाकी बचा पानी गरदन के आगे-पीछे उड़ेल लिया। उसे लगा कि वह ठंडे पानी से भरी किसी नदी में तैर रही है। पानी की लहरें उसके बदन से टकराती बन-बिगड़ रही हैं और उसका पानी रोम-रोम अपनी प्यास बुझाता उस नदी के जाल में अठखेलियां कर रहा है।'[13]

आज भारत देश की सभी नदियों में 85 प्रतिशत जल प्रदूषित है। कहीं धोबी घाट हैं, कहीं औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला मलबा, कहीं शराब बनाने के संयत्रों की गन्दगी, कहीं रबर व प्लास्टिक के कारखाने तरह-तरह के माध्यमों से जल को गन्दला करने वाले तत्त्व जल-प्रदूषण फैला रहे हैं। नदियों द्वारा गन्दगी की यह प्रक्रिया केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के अन्य देशों में भी जारी है। परिणामस्वरूप समुद्री पानी भी अनेक स्थानों पर प्रदूषित हो चला है। अनेक स्थानों पर यह जल समुद्री जीवों के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ है। वास्तव में जल प्रदूषण की इस स्थिति से समूचे पर्यावरण को भारी नुकसान पहुँच रहा है। सम्पूर्ण जैव-प्रक्रिया और जीवनदायिनी प्रकृति पर यह अपना घातक प्रभाव छोड़ रहा है। नासिरा शर्मा ने ट्रांजिस्टर पर चल रहे समाचार के संदर्भ में इसे इस तरह बताने का प्रयास किया है- 'कई जिलों में पानी की जांच से पता चला है कि नलकूप से आने वाला पानी पीने लायक नहीं है। भोजपुर जिले में पानी में आरसेनिक (संखिया) की मात्रा बहुत अधिक पाई गई है जिसका सेवन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। अब सारे नलकूप सील कर दिए गए हैं और उस इलाके में टैंकर की सहायता से जनता को सरकार जल उपलब्ध करवा रही है।'[14] भारत में प्राचीन काल से धर्म, भाषा, जाति, साम्प्रदायिकता आदि सम्बन्धी झगड़े चलते आ रहे हैं परन्तु वर्तमान भारत में पानी की अत्यधिक कमी है। यही स्थिति लगभग पूरे विश्व की भी है। इस बात का स्पष्टीकरण लेखिका ने इस संदर्भ में प्रस्तुत किया है- 'हमने धरती से पानी तो खूब लिया, मगर उसे जो देना था वह नहीं दिया। इस धरती पर हुए हमारे अत्याचार ही हमें आज इस दुर्दशा में डाले हुए हैं फिर भी हम होश में नहीं आ रहे हैं। पहले धर्म को लेकर धर्म-युद्ध होते थे फिर सीमा को लेकर तलवारें खिंचती थीं और अब देखना, कुरैशी भाई, जल को लेकर प्रांतों के बीच यद्ध छिड़ेगा। ताज्जुब नहीं कि यह गृह-युद्ध एक दिन विश्व-महायुद्ध में बदल जाए।'[15] दुनिया के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है परन्तु पीने योग्य मीठा जल मात्र 3 प्रतिशत है। शेष भाग खारा जल है। इसमें से मात्र एक प्रतिशत मीठे जल का ही वास्तव में हम उपयोग कर पाते हैं। इस से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण प्राणियों के लिये पीने युक्त पानी की बहुत अधिक कमी है। देश के बड़े हिस्से के ग्रामीण घरों में शुद्ध जल नहीं पहुंच पाता। नदियों के किनारे 71 स्थलों को प्रदूषित चिन्हित किया गया है। नासिरा शर्मा ने पानी के उपयोग करने के संदर्भ में पानी का विवरण प्रस्तुत किया है- 'आज विश्व में आंकड़ों द्वारा ज्ञात होता है कि लगभग एक अरब से ज्यादा लोगों को साफ पानी पीने के लिए उपलब्ध नहीं है। दो अरब लागों को नहाने-धोने के लिए पानी नहीं मिल पाता, जिससे लोग अनेक तरह के रोगों का शिकार हो रहे हैं। मृत्युदर दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। भारत में गाँव, कस्बों, शहरों में लोग कुओं, तालाबों और नदियों से पानी लेते हैं जो अधिकतर गंदा और कोटाणु-युक्त होता है। उसमें प्राकृतिक रुप से पाए जाने वाले संखिया की मिलावट होती है। सारे विश्व में 261 प्रमुख नदियाँ एक से अधिक देशों से होकर गुजरती हैं। दुनिया के कुल नदी-जल-प्रवाह का 80 प्रतिशत इन्हीं में है और जिन देशों से होकर ये गुजरती हैं उनमें संसार की 40 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। पानी के कारण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तनाव पनपते हैं, जैसे-भारत और पाकिस्तान, भारत और बंगलादेश, भरत और नेपाल, सीरिया और तुर्की के बीच और स्वयं भारत के अन्दर कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच कावेरी नदी को लेकर तनाव की स्थिति पनप चुकी है।'[16] पानी की कमी के कारण पानी की कीमत आज समाज में अत्यधिक बढ़ चुकी है। कहा जाता है कि यदि पानी की इतनी कमी रही तो आने वाले समय में मानव अस्तित्त्व समाप्त होने की कगार पर पहुँच जाएगा। नासिरा शर्मा ने भी अपने उपन्यास में इस बात का प्रस्तुत किया है। लेखिका ने कमाल के संदर्भ में पानी की कीमत

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

को दर्शाया है- परिचय के साथ बातचीत का सिलसिला आरम्भ हो गया। तालाबों पर काम करने वाले सज्जन ने कमाल से बातें करते हुए बताया कि यहाँ पर बहू से घी का घड़ा टूट जाए तो उसे सास से इतनी जली-कटी नहीं सुनने को मिलती थी जितनी पानी की गगरी के फूट जाने पर ... पानी की किल्लत ने उसको इस हद तक महत्त्वपूर्ण बना दिया था कि राजस्थानी पड़ोसी को घी खुशी-खुशी दे देते हैं मगर पानी नहीं।'[17]

पानी की समस्या केवल विकासशील या पिछड़े देशों की ही समस्या नहीं है, विश्व के कई समृद्ध और अतिसमृद्ध देश भी अपनी आबादी के लिए आवश्यक मात्रा में पानी उपलब्ध कराने की भीषण समस्या से जूझने में जुटे हुए हैं। नासिरा शर्मा ने साफिया के संदर्भ में इसे स्पष्ट किया है- 'कल रात फोन आया था, कह रही थी कि यहाँ पर तीन दिन से बिजली नहीं है जिसकी वजह से पानी नहीं है। कल दोपहर को कॉलोनी में पानी की गाड़ी आई तो सबकी टंकियां भरीं, वरना तो सब नहाए बिना इस गरमी में हाय-हाय कर रहे थे।'[18]

जल संकट की समस्या के दो पहलू हैं- एक सूखा और दूसरा बाढ़। नासिरा शर्मा ने बाढ़ को भो अपने उपन्यास में चित्रित किया है। बाढ़ एक ऐसी समस्याओं है जो कि अपने साथ-साथ विविध समस्याओं को भी साथ लेकर चलती है। लेखिका ने समीना और कमाल के संदर्भ में बाढ़ की समस्या को चित्रित किया है- 'समीना और कमाल जब पुल के नीचे से गुजरे तो उन्हें लगा कि पुरानी मारुति आधी डूब चुकी है, बस कुछ ही देर में इंजन बंद होने वाला है, मगर बड़ी आसानी से कार पानी को चीरती ऊपर सड़क पर आई। दोनों ने राहत की सांस ली।'[19] जल संकट एक ऐसी समस्या है जो कि अपने साथ-साथ विभिन्न प्रकार की समस्याओं को साथ लेकर आता है। लेखिका ने मास्टर जी के संदर्भ में जल समस्या के साथ भविष्य में आने वाली विभिन्न समस्याओं पर विचार किया है- 'इस सारी चुहलबाजी में दूर पानी वाले मास्टर जी आने वाले संकट के बारे में सोचने में मग्न थे। उन्हें लग रहा था कि घर-घर पानी की कमी से इंसानी जिन्दगी दुश्वार हो चली थी। अब पानी लोगों का कार्यक्रम तय करने लगा है। पानी है तो नहाना हो सकता है, पानी नहीं है तो कपड़े नहीं धुल सकते हैं, पानी है तो पौधो सींचे जाएंगे, पानी नहीं है तो रसोई भी जूठी पड़ी रहेगी। सारा खेल पानी का है। जेब में पैसा है, मगर पानी मौजूद नहीं। कुंआ है तो डोल नहीं कि डालकर पानी निकाल चुल्लू लगा, गटर-गटरकर प्यास बुझा ले क्योंकि वहाँ तो कूड़ा भरा है।'[20]

जल मनुष्य एवं प्राणियों के जीवन की प्राथमिक जरुरत है। इसके बिना जीवन तहस-नहस हो जाता है। नासिरा शर्मा ने भी अपने उपन्यास में जल की कमी के कारण दैनिक जीवन में आने वाले बदलाव को बताने का प्रयास किया है और इसी के साथ-साथ उन्होंने जल के उचित प्रयोग एवं सही प्रयोग के संकेत दिये हैं। लेखिका ने साफिया के संदर्भ में इस बात को स्पष्ट करना चाहा है- 'देर में नहाने की आदत के चलते आराम से सब नल जाने के बाद स्नान के लिए उठते और बाल्टियों में भरा पानी खर्च कर डालते। दोपहर तक किचन का पानी भी समाप्त हो जाता और बरतन धोने वाली जूठे बरतन छोड़ चली जाती। इसके किचन में मक्खी और कॉकरोच बढ़ रहे थे। दवा स्प्रे करो तो दादी का उसकी तेज गंध, चक्कर और उल्टी जैसी कैफियत में ले आती थी। कपड़े बेधुले ढेर हो जाते, पानी की कमी से वाशिंग मशीन भी नहीं चल पाती थी। इधर बिजली-कटौती के चलते कभी दोपहर में तो कभी रात में तीन-चार घंटे बिजली नहीं आती।'[21] जल की शुद्धता के कारण सदियों से इसका उपयोग पूजा पाठ, धार्मिक कार्यों में होता आ रहा है लेकिन मनुष्य ने अपने लाभ की खातिर इसको दूषित करना शुरु कर दिया है, जब जल में अपशिष्ट पद्वार्थ कूड़ा-कचरा, मल मूत्र, कीचड़, रसायनिक पद्धार्थ, धातुएँ व विषैले पद्धार्थ मिल जाते हैं जिससे जल की शुद्धता नष्ट हो रही है। देश के बड़े भाग की जनसंख्या के पास पीने लायक पानी का स्रोत नहीं है। केवल 28 प्रतिशत जनसंख्या के पास सफाई व्यवस्था है। इस बात को लेखिका ने स्पष्ट किया है- 'यह बात तो आपकी सही है अतिसार, हैजा, कृमि रोग, पेचिश, मोतीझारा, पीलिया, जुकाम, चर्मरोग, अंधापन, आंत्रशोथ, लकवा, नारु, अमीबोवाइसिस एवं पेट संबंधी अनेक रोग अशुद्ध जल पीने की देन हैं तो दूसरी ओर, हमारे देश के पंद्रह राज्यों एवं राजस्थान प्रदेश के लगभग आधे से अधिक

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

जिलों में फ्लोरोसिस की समस्या है। आप तो जानते हैं। हवा, भोजन, पानी सभी में फलोराइड की मात्रा मिलती है। अब हम अपने को कहां तक बचाएं।'[22]

जल और मनुष्य के सम्बन्ध को लेखिका ने इस संदर्भ में स्पष्ट किया है- ''पानी और शरीर का आपसी रिश्ता बड़ा गहरा है। साफ पीने के पानी की बढ़ती कमी हमें अनेक खतरनाक बीमारियों की ओर ले जाएगी जो पुरानी बीमारियों से हटकर होंगी, जिनका उपचार और निदान जब तक नए शोध द्वारा सामने आएंगे तब तक नई बीमारियाँ इंसानी शरीर को क्षति पहुंचा चुकी होगी और पीढ़ियाँ गुजर जाएंगी।'[23] हमारे देश में पानी की इतनी अधिक कमी होने की वजह से मनुष्य के सामने अत्यधिक समस्याएँ आकर खड़ी हो रही हैं। लेखिका ने बताना चाहा है कि जल संकट के कारण मनुष्य पानी के लिए क्षण-क्षण तरस रहा है और यहा तक कि उसे स्वप्न में भी पानी ही नजर आ रहा है। लेखिका ने कमाल के संदर्भ में इस बात को स्पष्ट किया है- 'यहाँ जरूरी पानी होगा। कहता कमाल तेजी से बावली की सीढ़ियां उतरता चला जाता है। समीना उसके पीछे भागती है। बादल अब भी गुर्रा रहे हैं। अब उनका रंग सुरमई से काला हो गया है, जिनके बीच बिजली चमक रही है। समीना को लगता है कि कुछ होने वाला है। अंधेरे में उसे कमाल नज़र नहीं आता। तभी तेज बिजली चमकती है समीना को कमाल दिखता है जो नीचे झुककर बावली को तलहटी में कुछ टटोल रहा है और दोनों हाथों को चूल्लु में भर खुशी से चीखता है - पानी..... पानी.....'[24] पानी की कमी ने देश को झकझोर कर रख दिया ह। इस पर काबू पाने के लिए हमें प्रयास करने चाहिए एवं समय-समय पर संगोष्ठी या सेमिनार द्वारा इस समस्या पर चर्चा की जानी चाहिए। नासिरा शर्मा ने भी अपने उपन्यास में कमाल के संदर्भ में सेमिनार में पानी की समस्या पर चर्चा की है- 'सत्र के प्रारम्भ में पढ़े गए आलेख में बिहार की भौगोलिक बनावट पर छोटी-सी टिप्पणी थी, जिसके हिसाब से बिहार को तीन भागों में बांटा गया था-उत्तर बिहार का मैदानी इलाका, दक्षिण बिहार का मैदानी भाग और छोटा नागपुर या पठारी क्षेत्र पहला हिस्सा जो नदियों के साथ आई मिट्टी से बना है और नेपाल के तराई वाले इलाकों से लेकर गंगा के उत्तरी किनारे तक आता है। यहाँ कि जमीन उर्वरा और घनी आबादी वाली है। दक्षिण का मैदानी इलाका गंगा के दक्षिण तट से लेकर छोटा नागपुर के पठारों के बीच स्थित है, यहाँ सोन, पुनपुन, मोरहर, मुहाने, गामिनी नदियाँ है जो गंगा में जाकर मिलती हैं। बरसात में सारी नदियाँ ऊनने लगती है। गंगा के मैदानी इलाके दक्षिणी भाग में पुराना पटना, गया और शाहाबाद जिलों तथा दक्षिणी मुंगेर और दक्षिणी भागलपुर आता है। जहां की जमीन में नमी बनाए रखने की क्षमता कम है। यहाँ भू जल का स्तर बहुत कम है। गंगा के किनारे के इलाके को छोड़ कहीं भी कुआँ या नलकूप खोदना असंभव है। यह भू-भाग दक्षिण से उत्तर की ओर तेज ढलान वाला है जिसके कारण धरती पर पानी का टिकना मोहाल है सो जलवायु खेती के अनुकूल नहीं।'[25]

प्रख्यात लेखिका नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' जलीय चेतना को अभिव्यक्त करती एक महत्त्वपूर्ण रचना है। जो सामाजिक में अत्यन्त प्रासंगिक एवं ज्वलन्त है। पानी से जुड़े विविध रंग-प्रसंग इस रचना में रूपायित हुए हैं। जो वर्तमान एवं भविष्य की समस्याओं के संदर्भ की चुनौतियों से निपटने का उपाय भी अपने में समाहित किये हुए हैं। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास के माध्यम से यह बताना चाहा है कि जल संकट से बचाव के लिये जल स्रोतों के समुचित रख-रखाव पर विशेष ध्यान देना होगा। कुओं की मरम्मत करानी होगी। जल संकट से निजात पाने के उपाय के साथ ही लेखिका ने यह भी बताना चाहा है कि यदि जल संकट जैसी गम्भीर समस्या पर काबू नहीं पाया गया तो वह दिन दूर नहीं जब पानी के मामले में हम जल्दी ही आपात स्थिति में पहुँच जायेंगे। उक्त उपन्यास में लेखिका ने जल के विभिन्न रूप-प्रतिरूपों को बाखूबी उकेरा है। दैनिक जीवन में पानी से जुड़े क्रिया-व्यापारों, पानी के अभाव से उत्पन्न संकट व पानी का महत्ता को प्रतिपादित करना लेखिका का उद्देश्य रहा है। जल से जुड़ी समस्याओं को चित्रित करना परोक्षत: जल संकट के प्रति गंभीरता, सजगता दिखाना व समाधान खोजना है और लेखिका का यह प्रयास वस्तुत: प्रशंसनीय ह। कि यह इस समस्या के संदर्भ में संपूर्ण मानवता को सचेत करती है और भविष्य में छिपी चेतावनी की अनावृत्त करती

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्राफेसर,
हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सुश्री सविता

शोध-छात्रा, हिन्दी-विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

है। ताने बाते में पात्रों और स्थितियों के जल समस्या को अनुस्पुत कर रची गयी औपन्यासिक कृति 'कुइयाँजान' इस अर्थ में महत्तवपूर्ण है।

संदर्भ

1. नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2009), पृ॰ 11
2. वही, पृ॰ - 13 3. वही, पृ॰ - 13 4. वही, पृ॰ - 34
5. वही, पृ॰ - 35 6. वही, पृ॰ - 38 7. वही, पृ॰ - 39
8. वही, पृ॰ - 43 9. वही, पृ॰ - 61
10. वही, पृ॰ - 99 11. वही, पृ॰ - 77 12. वही, पृ॰ - 81
13. वही, पृ॰ - 80 14. वही, पृ॰ - 83 15. वही, पृ॰ - 85
16. वही, पृ॰ - 88 17. वही, पृ॰ -113 18. वही, पृ॰ - 137
19. वही, पृ॰ - 174 20. वही, पृ॰ - 271 21. वही, पृ॰ - 277
22. वही, पृ॰ -308 23. वही, पृ॰ -317 24. वही, पृ॰ - 369
25. वही, पृ॰ - 384

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN